मक्खन-रोटी के लिए रंग बदलना ठीक नहीं

मैं यह धृष्टता तो नहीं कर सका कि यह कहूँ कि संसार के अन्य बड़े पत्र गलत रास्ते पर जा रहे हैं और उनका अनुकरण नहीं होना चाहिए, किंतु मेरी धारणा यह अवश्य है कि संसार के अधिकांश समाचारपत्र पैसे कमाने और झूठ को सच और सच को झूठ सिद्ध करने के काम में उतने ही लगे हुए हैं जितने कि संसार के बहुत से चरित्र शून्य व्यक्ति। अधिकांश बड़े समाचारपत्र धनी-मानी लोगों द्वारा संचालित होते हैं। इसी प्रकार के संचालन या किसी दल-विशेष की प्रेरणा से ही उनका निकलना संभव है। अपने संचालकों या अपने दल के विरुद्ध सत्य बात कहना तो बहुत दूर की वस्तु है, उनके पक्ष-समर्थन के लिए हर तरह के हथकंडों से काम लेना अपना नित्य का आवश्यक काम समझते हैं। इस काम में तो वे इस बात का विचार तक रखना आवश्यक नहीं समझते कि सत्य क्या है? सत्य उनके लिए ग्रहण करने की वस्तु नहीं, वे तो अपने मतलब की बात चाहते हैं कि संसार-भर में यह हो रहा है। इने-गिने पत्रों को छोड़कर सभी पत्र ऐसा कर रहे हैं।

जिन लोगों ने पत्रकार-कला को अपना काम बना रखा है, उनमें बहुत कम ऐसे लोग हैं जो अपनी चिंताओं को इस बात पर विचार करने का कष्ट उठाने का अवसर देते हों कि हमें सच्चाई की भी लाज रखनी चाहिए। केवल अपनी मक्खन-रोटी के लिए दिन-भर में कई रंग बदलना ठीक नहीं है। देश में भी दुर्भाग्य से समाचार पत्रों और पत्रकारों के लिए यही मार्ग बनता है। हिन्दी पत्रों के सामने भी यही लकीर खिंचती जा रही है। वहाँ भी अब बहुत-से समाचार पत्र सर्वसाधारण के कल्याण के लिए नहीं रहे। सर्वसाधारण उनके प्रयोग की वस्तु बनते जा रहे हैं।

एक समय था, इस देश में साधारण आदमी सर्वसाधारण के हितार्थ एक ऊँचा भाव लेकर पत्र निकालता था और उस पत्र को जीवन क्षेत्र में स्थान मिल जाया करता था। आज वैसा नहीं हो सकता। आपके पास जबर्दस्त विचार हों और पैसा न हो और पैसे वालों का बल न हो तो आपके विचार आगे फैल नहीं सकेंगे। आपका पत्र न चल सकेगा। इस देश में भी समाचार पत्रों का आधार धन हो रहा है। धन से ही वे निकलते हैं, धन ही के आधार पर वे चलते हैं और बड़ी वेदना के साथ कहना पड़ता है कि उनमें काम करने वाले बहुत-से पत्रकार भी धन ही की अभ्यर्थना करते हैं। अभी यहाँ पर अंधकार नहीं हुआ है, किंतु लक्षण वैसे ही हैं। कुछ ही समय पश्चात यहाँ के समाचार पत्र भी मशीन के सहारे हो जाएंगे और उनमें काम करने वाले पत्रकार केवल मशीन के पुर्जे। व्यक्तित्व न रहेगा। सत्य और असत्य का अंतर न रहेगा। अन्याय के विरुद्ध डट जाने और न्याय के लिए आफतों के बुलाने की चाह न रहेगी, रह जाएगा केवल ऊँची लकीर पर चलना। मैं तो उस अवस्था को अच्छा नहीं कह सकता। ऐसे बड़े होने की अपेक्षा छोटे और छोटे से छोटे, किंतु सिद्धांत वाले होना कहीं अच्छा।

पत्रकार कैसा हो, इस संबंध में दो राय हैं। एक तो यह कि उसे सत्य या असत्य, न्याय और अन्याय के आँकड़े में नहीं पड़ना चाहिए। एक पत्र में वह नरम बात कहे तो दूसरे में बिना हिचक वह गरम कह सकता है। जैसा वातावरण देखें, वैसा करे, अपने लिखने की शक्ति से हटकर पैसा कमाए, धर्म-अधर्म के झगड़े में न अपना समय खर्च करे, न अपना दिमाग ही। दूसरी राह कि पत्रकार की समाज के प्रति बड़ी जिम्मेदारी है। वह अपने विवेक के अनुसार अपने पाठकों को ठीक मार्ग पर ले जाता है। वह जो कुछ लिखे, प्रमाण और परिणाम का लिखे और अपनी मति-गति में सदैव शुद्ध और विवेकशील रहे। पैसा कमाना उसका ध्येय नहीं है। लोकसेवा उसका ध्येय है और अपने काम से जो पैसा वह कमाता है, वह ध्येय तक पहुँचने के लिए एक साधन-मात्र है। संसार के पत्रकारों में दोनों तरह के आदमी हैं। पहले दूसरी के पत्रकार अधिक थे, अब इस उन्नति के युग में पहली तरह के। उन्नति समाचार पत्रों के आकार-प्रकार में हुई है। खेद की बात कि उन्नति आचरणों की नहीं हुई। हिन्दी के समाचार पत्र भी उन्नति के राज-मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। मै हृदय से चाहता हूं कि उनकी उन्नति उधर हो या नहीं, किंतु कम-से-कम वे आचरण के क्षेत्र में पीछे न हटें और जो सज्जन इन पंक्तियों को पढ़े वे अपने आचरण से संबंधित आदर्श को सदा ऊँचा समझे, पैसे का मोह और बल की तृष्णा भारतवर्ष में किसी भी नए पत्रकार को उसके आचरण और पवित्र आदर्श से बहकने न दे यही मेरे हृदय की एकमात्र अभिलाषा है।

गणेश शंकर विद्यार्थी

(1930 में 'प्रताप' परिवार से जुड़े पत्रकार भी विष्णुदत्त शुक्ल की पुस्तक 'पत्रकार–कला' की भूमिका के रूप में लिखे गए लेख का अंश)